व्यञ्जन वि + अंजन (यण् संधि)

परिभाषा :- वे ध्वनियाँ जिन्हें स्वरों की सहायता से उच्चारित किया जाता है।

⇒ वे ध्वनियाँ जो स्वरों के अधीन होती हैं।

जैसे :- क् + अ = क

Note :- मूल 33 व्यंजन + 04 संयुक्ताक्षर + 02 उत्क्षिप्त/ताड़नजात + 05 अरबी व फारसी से ग्रहीत

ClassRoom Notes

<1> स्पर्श/वर्गीय व्यंजन = 25

- कवर्ग - क, ख, ग, घ, ङ
- चवर्ग - च, छ, ज, झ, ञ
- टवर्ग - ट, ठ, ड, ढ, ण
- तवर्ग - त, थ, द, ध, न
- पवर्ग - प, फ, ब, भ, म

<ii> अन्त:स्थ = 04

य, र, ल, व

यण् प्रत्याहार = य, व, र, ल

<iii> ऊष्म/ऊष्मीय = 04

श, ष, स, ह

संयुक्त + अक्षर

⇒ **संयुक्ताक्षर** :- दो असमान व्यंजनों से मिलकर बना ध्वनि समूह।

क्ष = क् + ष् + अ
त्र = त् + र् + अ
ज्ञ = ज् + ञ् + अ [ग + य] — ध्वनित रूप
श्र = श् + र् + अ

ज्ञान — ग्यान

⇒ 02 - उत्क्षिप्त / ताड़नजात
ड़, ढ़

05 - अरबी व फारसी भाषा से गृहीत
क़, ख़, ग़, ज़, फ़

अफ़सोस

नुक्ता

व्यंजनो का उच्चारण स्थान :-

य र ल व
श ष स ह

[ङ, ञ, ण, न, म] ①
नासिका

मूर्धा [टवर्ग + र, ष] ड़, ढ़

तालु [चवर्ग + य, श]

ओष्ठ [पवर्ग]

कण्ठ [कवर्ग + ह] ①

दन्त [तवर्ग + ल, स] ②

व, फ़ → दन्तौष्ठ

①
न, स, ल, ज़
वर्त्स - वर्त्स्य

न = वर्त्स, नासिका, दन्त

<ii>
ह = काकल - काकल्य
अतिजिह्वा - स्वरयंत्र
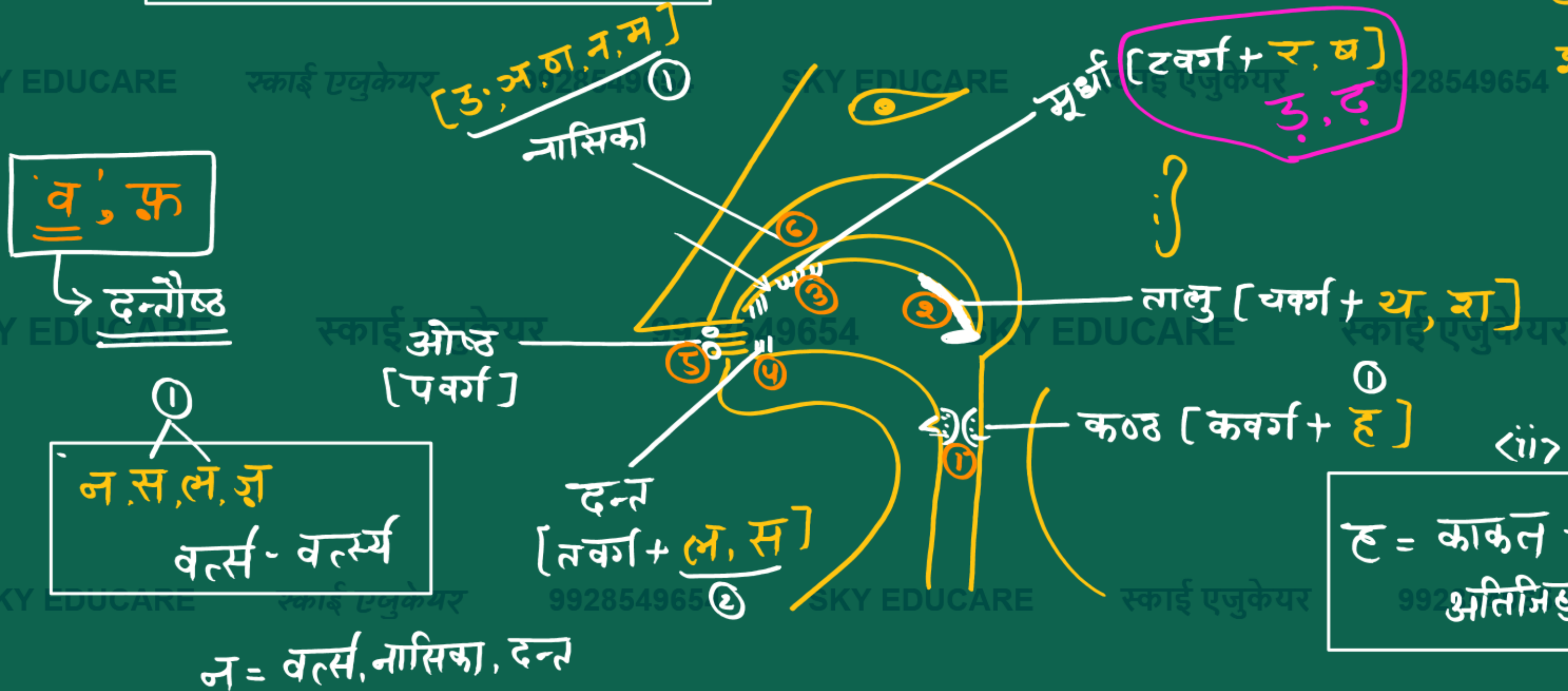
व्यंजनों का वर्गीकरण

- ‹i› उच्चारण स्थान के आधार पर
- ‹ii› प्रयत्न के आधार पर
  - ‹i› बाह्य प्रयत्न के आधार पर
    - ‹i› घोषत्व / कम्पन / नाद के आ॰ पर
      - ‹i› सघोष / घोष
      - ‹ii› अघोष
    - ‹ii› प्राण वायु / श्वास / प्राण तत्त्व के आ॰ पर (वायु)
      - ‹i› अल्पप्राण
      - ‹ii› महाप्राण
  - ‹ii› आन्तरिक / आभ्यन्तर प्रयत्न के आ॰ पर → ⑧

(i) घोषत्व / कम्पन / नाद के आधार पर

1) **सघोष/घोष** :- वे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय स्वर तंत्रियों में कम्पन उत्पन्न हो ।

इकतीस (31)

जैसे :- हर वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण [ग, ज, ड, द, ब, घ, झ, ढ, ध, भ, ङ, ञ, ण, न, म] + अन्तःस्थ [य, र, ल, व] + ह + सभी स्वर

ट्रिक - 3, 4, 5 चारों में लव हो रहा है जिनका स्वर गूँज रहा है ।

2) **अघोष** :- वे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय स्वर तंत्रियों में कम्पन उत्पन्न न हो ।

(13)

जैसे :- हर वर्ग का पहला व दूसरा वर्ण [क, च, ट, त, प, ख, छ, ठ, थ, फ] + श, ष, स

ट्रिक : 1 + 2 = 3स

② प्राण वायु / श्वास वायु / प्राण तत्त्व के आधार पर

1) **अल्पप्राण** :- वे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय कम मात्रा में प्राण वायु बाहर निकले।

जैसे :- हर वर्ग का पहला, तीसरा व पाँचवाँ वर्ण + अन्तःस्थ + सभी स्वर
(य, र, ल, व)

2) **महाप्राण** :- वे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय अधिक मात्रा में प्राण वायु बाहर निकले।

जैसे :- हर वर्ग का दूसरा व चौथा वर्ण + ऊष्मीय [श, ष, स, ह]

<i> सभी स्वर सघोष व अल्पप्राण होते हैं। ✓

<ii> सभी अन्तःस्थ वर्ण सघोष व अल्पप्राण होते हैं। ✓

<iii> हर वर्ग का तीसरा व पाँचवाँ वर्ण सघोष व अल्पप्राण होता है। ✓

<iv> सभी ऊष्मीय वर्ण अघोष व महाप्राण होते हैं।

→ ह - सघोष